

रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 1
 वेलहौसेन [स्रोत आलोचना], गुंकेल [फॉर्म आलोचना]

समीक्षा: वेलहाउज़ेन की वृत्तचित्र स्रोत परिकल्पना [जेईडीपी]

हम जूलियस वेलहाउज़ेन, उनके सिद्धांतों और पुराने नियम की ऐतिहासिक सामग्री पर उन सिद्धांतों के प्रभाव पर चर्चा कर रहे थे। मैंने आपके लिए उनके दस्तावेजी स्रोत परिकल्पना, जेईडीपी सिद्धांत, जैसा कि इसे कहा जाता है, को संक्षेप में रेखांकित करने का प्रयास किया। यह काफी हद तक इस बात पर आधारित है कि जे या ईश्वरीय नाम यहोवा का समर्थन करने वाला स्रोत सबसे पुराना (लगभग 850 ईसा पूर्व) है, ई या एलोहिम स्रोत (लगभग 750 ईसा पूर्व) पी या प्रीस्टली दस्तावेज़ नवीनतम है (लगभग 450 ईसा पूर्व), और डी या व्यवस्थाविवरण स्रोत 621 ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया है जो योशियाह का समय था और कानून की पुस्तक की खोज हुई थी।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण तिथियाँ, 721 ईसा पूर्व उत्तरी साम्राज्य का असीरिया में पतन, 586 ईसा पूर्व दक्षिणी साम्राज्य का बेबीलोन में पतन, इज़राइल के इतिहास की दो प्रमुख तिथियाँ हैं। बेशक, निर्गमन लगभग 1400 ईसा पूर्व और डेविड का समय 1000 ईसा पूर्व है

तो उस तरह की समय रेखा के साथ, वेलहाउज़ेन के अनुसार, पेंटाटेच को बनाने वाली सामग्री को एक लंबी अवधि में विकसित किया गया था, शुरुआत जे से, उसके बाद ई, फिर डी, और अंत में पी, रेडैक्टर्स की एक श्रृंखला के साथ जो सामग्रियों को संयुक्त किया। ताकि अंतिम परिणाम सामग्रियों की पच्चीकारी हो। उनका दावा था कि कई अवधारणाएं और विचार जो शुरुआती समय के लिए जिम्मेदार हैं, वास्तव में उस समय अस्तित्व में होने के कारण वैध नहीं हैं, बल्कि वे बाद के समय को प्रतिबिंबित करते हैं जिसमें ये स्रोत लिखे गए थे। खतना, वाचा, चुनाव जैसे विचार, जो पितृसत्ताओं के लिए जिम्मेदार थे, वास्तव में बाद के विचार थे जो बेबीलोन के निर्वासन के समय से डाले गए थे। वे पी के लेखन में मौजूद थे और पहले के इतिहास को पूरी तरह से विकृत करते हुए, इसे पहले के समय में प्रक्षेपित किया गया था। मैंने कुछ अन्य उदाहरण दिये।

बहुदेववाद से हेनोथिज्म से एकेश्वरवाद तक

मुझे लगता है कि घंटे के अंत में, किसी ने एकेश्वरवाद के बारे में एक प्रश्न पूछा और मैंने उल्लेख किया कि वह धर्म को बहुदेववाद (कई भगवान) से हेनोथिज्म (हमारा भगवान बेहतर है) से एकेश्वरवाद (एक भगवान) तक विकसित होने के रूप में देखता है। यह भी आम तौर पर धर्मों के इस विकासवादी विकास के अनुरूप है।

पुरोहित धर्म के लिए प्राकृतिक भविष्यवाणी

मैं आपको एक और पैटर्न देता हूँ जिसके बारे में उन्होंने बात की। उन्होंने यह समझा कि जिसे उन्होंने "प्राकृतिक धर्म" कहा था, वह आदिम पूजा थी जो जेई स्रोतों में परिलक्षित होती थी। फिर भविष्यसूचक धर्म जिसने नैतिक चेतना विकसित की जिसे उन्होंने डी स्रोत में प्रतिबिंबित पाया। फिर बाहरी औपचारिक अनुष्ठानों के साथ पुरोहित धर्म, जिसका श्रेय उन्होंने निर्वासन के बाद के पी स्रोत को दिया। तो आप देख सकते हैं कि एक अन्य प्रकार की विकासात्मक योजना है, प्राकृतिक धर्म, भविष्यसूचक धर्म और पुरोहित धर्म, जिसे वह अपने जेईडीपी स्रोतों की प्रगति के साथ जोड़ता है, जिसके बारे में उनका दावा है कि यह पेंटाटेच के पाठ के पीछे स्थित है।

ऐतिहासिकता पर प्रभाव

अब याद रखें, ये स्रोत काल्पनिक हैं। इन स्रोतों के अस्तित्व का कोई दस्तावेजी सबूत कभी नहीं मिला है कि वह जे, ईडी और पी को लेबल करता है। इसलिए यह एक परिकल्पना है, लेकिन यह एक परिकल्पना है कि कई लोगों को लगता है कि वह बहुत अच्छी तरह से स्थापित है इसलिए इसे मुख्यधारा में कई लोगों द्वारा स्वीकार किया गया है समकालीन छात्रवृत्ति या वेलहाउजेन के समय से। मैं इस कक्षा में समय नहीं बिताऊंगा, इस कक्षा का उद्देश्य उनके सिद्धांत में जाना और बिंदुओं पर बहस करने और उनका खंडन करने का प्रयास करना नहीं है। आप पुराने नियम के परिचय में ऐसा करने जा रहे हैं। यहां हमारा उद्देश्य पुराने नियम में इतिहास पर सिद्धांत के प्रभाव को देखना है। यह जो करता है उसके परिणामस्वरूप पुराने नियम की ऐतिहासिक सामग्री को

बहुत ही कम दृष्टि से देखा जाता है क्योंकि उसका आरोप है कि उसके सिद्धांत के कारण ऐतिहासिक सामग्री में बहुत सारी विकृतियाँ शामिल हैं, यदि पूरी तरह से मनगढ़ंत बातें नहीं हैं।

वेलहौसेन का इस्तीफा

अब, सबसे प्रारंभिक सामग्री, डेविड (1000 ईसा पूर्व) और मूसा (लगभग 1400 ईसा पूर्व) के समय के बाद। वेलहाउज़ेन के स्रोत मूसा के समय के कम से कम 600 वर्ष बाद के हैं और पेंटाटेच का अंतिम संकलन निर्वासन के बाद का है जो मूसा के लगभग 1000 वर्ष बाद का है। इससे पहले कि हम किसी और चीज़ पर आगे बढ़ें, आइए इसके साथ थोड़ा और आगे बढ़ें। वेलहाउज़ेन और उनके अनुयायियों के लिए, उनकी रुचि पुराने नियम के संदेश में नहीं थी। उनकी प्रमुख चिंता अपनी ऐतिहासिक आलोचना पद्धति द्वारा उस चीज़ का पुनर्निर्माण करना था जिसे वे इज़राइल के धार्मिक विकास का इतिहास मानते थे। यह इस विकासवादी योजना पर किया गया था। अब यह दिलचस्प है कि वेलहाउज़ेन जर्मनी के ग्रिफ़्सवाल्ड नामक स्थान पर एक विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र संकाय में पढ़ा रहे थे। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उन्हें वास्तव में उस पद से इस्तीफा दे देना चाहिए क्योंकि उन्हें नहीं लगता था कि वह जो पढ़ा रहे थे वह उस तरह की चीज़ थी जो लोगों को मंत्रालय के लिए तैयार करेगी। इस छोटी सी किताब में, जिसका उल्लेख ग्रंथ सूची, पृष्ठ 2, चौथी प्रविष्टि, वाल्टर ज़िम्मरली, द लॉ एंड द प्रोफेट्स के अंतर्गत किया गया है। वह पेज 22 पर वेलहाउज़ेन के बारे में बात करते हैं। वह कहते हैं, “1872 में उन्हें ग्रिफ़्सवाल्ड में धर्मशास्त्र संकाय में प्रोफेसर के रूप में बुलाया गया था। ग्रिफ़्सवाल्ड में बिताए गए दस वर्षों में, उन्होंने ओल्ड टेस्टामेंट की साहित्यिक आलोचना पर अपना निर्णायक अध्ययन लिखा। 1882 में, उन्होंने धर्मशास्त्र संकाय में अपनी प्रोफेसर पद से इस्तीफा दे दिया। मंत्रीमंडल को लिखा पत्र जिसमें उन्होंने अपना इस्तीफा दिया, इस महान व्यक्ति की ईमानदारी का एक प्रभावशाली प्रमाण है। इस पत्र में वह लिखते हैं 'मैं धर्मशास्त्री बन गया क्योंकि मेरी रुचि बाइबिल के वैज्ञानिक उपचार में थी। फिर भी मुझे धीरे-धीरे यह एहसास हुआ कि धर्मशास्त्र के एक प्रोफेसर के पास, उसी समय, प्रोटेस्टेंट चर्च में सेवा के लिए छात्रों को तैयार करने का काम भी है और मैं इस व्यावहारिक कार्य को करने के लिए पर्याप्त नहीं हूँ। तब से, मेरी धार्मिक प्रोफेसरशिप ने मेरी अंतरात्मा पर

भारी असर डाला है।" यह उनके इस्तीफे के पत्र से है। तो ज़िम्मरली कहते हैं, "इस प्रकार वेलहाउज़ेन अपने धर्मशास्त्रीय प्रोफेसर पद से विवेक के आधार पर सेवानिवृत्त हो गए और हाले में एक अन्य विश्वविद्यालय में सेमेटिक भाषाओं के लिए असाधारण प्रोफेसर की नियुक्ति स्वीकार कर ली। लेकिन जब वह वहां थे तो साहित्यिक आलोचक के रूप में उनकी अद्भुत प्रतिष्ठा के कारण उन्हें ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ाने से मना कर दिया गया था।"

इस बारे में मैं जो कहना चाहता हूं वह यह है कि मुझे लगता है कि वेलहाउज़ेन ने इस मुद्दे को देखा और मैं ज़िम्मरली से सहमत हूं कि उन्होंने इस्तीफा देकर कुछ ईमानदारी दिखाई। समस्या यह है कि जिन लोगों ने उनके विचारों को स्वीकार किया, वे धार्मिक विद्यालयों में पद ग्रहण करते रहे और, विशेष रूप से इस देश में, धर्म के मदरसों और स्नातक विद्यालयों में कई प्रोफेसर जर्मनी गए, वेलहाउज़ेन के छात्रों के अधीन अध्ययन किया, विचारों को स्वीकार किया और वापस चले गए और कायम रहे धार्मिक विद्यालयों के संदर्भ में विचार। इससे इस देश में कई प्रमुख संप्रदायों और मदरसों में उदार स्थिति पैदा हुई है। यदि वे वेलहाउज़ेन के इस्तीफे के साथ-साथ उनके विचारों को अपनाने में भी उनका अनुसरण करते, तो अमेरिकी चर्च का परिदृश्य बहुत आगे होता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने इस्तीफा दे दिया, उन्होंने नहीं दिया।

धार्मिक विकासवादी परिणाम का इतिहास

लेकिन अंतिम परिणाम यह हुआ कि पुराने नियम का संदेश खो गया और इसे विकासवादी आधार पर इज़राइल के धर्म के इतिहास के पुनर्निर्माण के प्रयास से बदल दिया गया। वास्तव में वेलहाउज़ेन परिप्रेक्ष्य से आप जिस चीज में रुचि रखते हैं वह पुराने नियम के दृष्टिकोण के अनुसार धर्मों का इतिहास है।

बी. फॉर्म आलोचना का उदय

फॉर्म आलोचना पर सामान्य टिप्पणियाँ

चलिए आपकी रूपरेखा पर वापस चलते हैं। आलोचनात्मक विचारों का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण है ए. "जूलियस वेलहाउज़ेन," और बी. "फॉर्म आलोचना का उदय।" मेरे वहां दो

उपशीर्षक हैं, 1. "हरमन गंकेल से" और 2. "गेरहार्ड वॉन रेड" है। सबसे पहले, फॉर्म आलोचना पर बस एक सामान्य टिप्पणी। वेलहाउज़ेन के समय से, 1800 के दशक के अंत और 1900 के प्रारंभ में, पुराने नियम के साहित्य में उनकी वृत्तचित्र या स्रोत परिकल्पना में कई संशोधन और परिशोधन हुए हैं। लेकिन उन्होंने जो मूल थीसिस विकसित की, जेईडीपी का वह क्रम, बरकरार रहा है। आप आज लोगों को यह कहते हुए सुन सकते हैं, "वेलहाउज़ेन अब पुराना हो चुका है, हम अब वेलहाउज़ेन से बहुत आगे निकल गए हैं।" कुछ मायनों में यह सच है, लेकिन बहुत सारे विकास वेलहुसेन्स के सैद्धांतिक आधार के शीर्ष पर रखे गए हैं। इसलिए, वह मूल अनुक्रम बरकरार है, जैसा कि विशेष रूप से पेंटाटेच के विभाजन को जे, ई, डी और पी लेबल वाले स्रोतों में स्वीकार किया गया है। यह सच है यह जानने के लिए आपको समकालीन साहित्य में बहुत दूर तक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। चीजें ऐसी ही हैं।

ओल्ड टेस्टामेंट के आलोचनात्मक अध्ययन में वेलहाउज़ेन के बाद संभवतः सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन फॉर्म आलोचना का विकास है। प्रपत्र आलोचना दस्तावेजी परिकल्पना को एक अतिरिक्त आयाम देती है। मुझे यह समझाना होगा कि इससे मेरा क्या तात्पर्य है। फॉर्म आलोचना के साथ, या कम से कम इसके अधिकांश अभ्यासकर्ताओं के साथ, वेलहाउज़ेन के जेईडीपी सिद्धांत का स्रोत विश्लेषण स्वीकार किया जाता है। फॉर्म आलोचना उनमें से किसी को भी उलट नहीं देती है या उनमें से किसी को अस्वीकार नहीं करती है। इसने उस स्रोत विश्लेषण को स्वीकार कर लिया।

स्रोत दस्तावेज़ के पीछे मौखिक परंपराएँ

लेकिन फॉर्म आलोचना का विचार दस्तावेजों के पीछे मौखिक परंपरा में प्रवेश करना है जिसे दस्तावेजों में क्रिस्टलीकृत माना जाता था। दूसरे शब्दों में, यहाँ विचार है: यहाँ J या यहोवा दस्तावेज़ है, हमने इसे अलग कर दिया है, हम इसे स्वीकार करते हैं, लेकिन हम जो करना चाहते हैं वह J के पीछे मौखिक परंपरा में इसके पूर्ववृत्त पर वापस जाना है जो अंततः लिखित रूप में क्रिस्टलीकृत हो गया उस J दस्तावेज़ में। अब, मैं एक मिनट में उस पर वापस आऊंगा।

हरमन गुंकेल (1862-1932)

पुराने नियम के साहित्य के विश्लेषण के लिए इस दृष्टिकोण के विकास में हरमन गुंकेल प्रमुख व्यक्ति थे। अब वह आपकी शीट पर "फॉर्म क्रिटिसिज्म" के अंतर्गत है। हरमन गुंकेल 1862 से 1932 तक जीवित रहे। अब इसकी तुलना वेलहाउज़ेन, 1844 से 1918 से करें, वे बहुत अधिक ओवरलैप हुए लेकिन आप कह सकते हैं कि गुंकेल वेलहाउज़ेन के एक युवा समकालीन हैं और वह हमें 1932 तक ले आते हैं। विलियम फॉक्सवेल अलब्राइट जो एक अमेरिकी प्राचीन निकट पूर्वी हैं विद्वान, मुझे नहीं पता कि यह नाम आपके लिए बहुत मायने रखता है या नहीं, उन्होंने बाल्टीमोर में जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में वर्षों तक पढ़ाया, अब उनकी मृत्यु हो चुकी है। वह एक बहुत ही प्रभावशाली बल्कि रूढ़िवादी अमेरिकी विद्वान और पुरातत्वविद् थे। वह गुंकेल के बारे में कहते हैं, "वह आधुनिक समय के सबसे उल्लेखनीय विद्वानों में से एक हैं।" अलब्राइट कहते हैं, "बाइबिल सामग्री के प्रति उनका दृष्टिकोण, उनके चरित्र और उद्देश्य को चित्रित करने में उनकी पद्धति को समकालीन बाइबिल अध्ययन की मुख्यधारा में रहने वाले सभी लोगों द्वारा एक या दूसरे तरीके से अपनाया गया है।" तो, गुंकेल के प्रभाव के बारे में यह सिर्फ एक प्रमुख व्यक्ति का आकलन है। उनकी कार्यप्रणाली को उन सभी लोगों ने स्वीकार किया है जो समकालीन बाइबिल अध्ययन की मुख्यधारा में हैं।

गुंकेल की शर्तें: गैटुंग / शैली, सिट्ज़ इम लेबेन, फॉर्मगेस्चिचटे

गुंकेल ने बाइबिल अध्ययन में कई शर्तें पेश कीं जो आम हो गई हैं। आइए मैं उन्हें आपको दे दूँ। वे जर्मन शब्द हैं, लेकिन यदि आप कोई तकनीकी साहित्य पढ़ेंगे तो संभवतः आपको उनका पता चल जाएगा। पहला है " गट्टुंग " जिसका जर्मन में अर्थ है "साहित्यिक प्रकार"। साहित्यिक प्रकार के लिए फ्रांसीसी शब्द "शैली" है, क्योंकि जब आप तकनीकी अध्ययन में पढ़ते हैं, तो कभी-कभी शब्द " गट्टुंग " होता है, और कभी-कभी यह "शैली" होता है, लेकिन आमतौर पर दोनों में से एक का उपयोग किया जाता है। इसका मतलब एक विशेष साहित्यिक प्रकार है, जैसे कविता, कथा, भविष्यसूचक पाठ, आदि। दूसरा शब्द जो गुंकेल की प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण है, और हम

एक मिनट में देखेंगे कि जर्मन अभिव्यक्ति सिट्ज़ इम लेबेन का अनुवाद कैसे किया जाता है वस्तुतः, "जीवन में स्थिति।" अंतिम शब्द formgeschichte है। अब यह एक शब्द है, "फॉर्म" अंग्रेजी की तरह "फॉर्म" है, और "गेस्चिच्ते" "इतिहास" है। जर्मन में यह एक शब्द है। जर्मन अक्सर शब्दों को एक साथ जोड़कर लंबे शब्द बनाता है। तो यह "रूपों का इतिहास" है।

अब जैसा कि मैंने कहा, बस एक मिनट पहले, फॉर्म आलोचना का विचार साहित्यिक दस्तावेजों जे, ई, डी और पी को त्यागना नहीं था, बल्कि उनके पीछे पूर्ववर्ती मौखिक परंपरा में प्रवेश करने का प्रयास करना था। गुंकल ने महसूस किया कि आपको इनमें से प्रत्येक दस्तावेज़, जे, ई, डी और पी के भीतर अलग-अलग कहानी इकाइयों को अलग करने की ज़रूरत है। आपको उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार वर्गीकृत करने की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक छोटी कहानी इकाई के साथ, आपको यह तय करना होगा कि यह किस साहित्यिक प्रकार का प्रतिनिधित्व करती है। फिर आपको यह तय करना होगा कि जीवन में कौन सी स्थिति, उस साहित्यिक प्रकार को जन्म देगी। कौन सा सिट्ज़ इम लेबेन इस साहित्यिक प्रकार को जन्म देगा? यह प्रक्रिया फॉर्मगेशिच्ते थी, रूपों का इतिहास, साहित्यिक रूप। तो गुंकल जो करना चाहता था वह दस्तावेज़ों के पीछे जाना था, उन प्रभावों और सेटिंग्स को अलग करना था जो उन स्रोत दस्तावेज़ों (जेईडीपी) के स्रोत थे।

फॉर्म आलोचना पद्धति

अब गुंकल की कार्यप्रणाली के बारे में कुछ बातें, एक यह कि गुंकल जो करता है उसमें वेलहाउज़ेन की तुलना में कुछ अधिक सकारात्मक है। वह इनमें से अधिकांश जेईडीपी दस्तावेज़ों की प्राचीनता को पहचानता है जो वेलहाउज़ेन ने नहीं पहचानी थी। दूसरे शब्दों में, वेलहाउज़ेन ने इन दस्तावेज़ों को लेखकों, जे लेखक, ई लेखक, डी लेखक, आदि की लिखित रचना के रूप में स्वीकार किया, और फिर इसे प्राचीन काल में वापस पेश किया, जबकि गुंकल को लगा कि जे एक का अंतिम परिणाम था। किसी परंपरा को मूल रूप से मौखिक रूप में पारित करने से लेकर अंतिम लिखित रूप में आने तक की लंबी प्रक्रिया। ताकि गुंकल के पास आपके पास कम से कम

यह मान्यता हो कि इन दस्तावेज़ों के कुछ घटक दस्तावेज़ में उनके अंतिम लिखित रूप में जो हम देखते हैं उससे कहीं अधिक पुराने हैं।

गंकेल और कालक्रम

यदि आप इसका रेखाचित्र बनाने का प्रयास करेंगे तो आपको कुछ इस प्रकार प्राप्त होगा। वेलहाउज़ेन के पास वह समयरेखा है और जे लेखक 950 से 850 था और ई लेखक, 850 से 750, इत्यादि। मैंने कहा, गंकेल के साथ आपको दस्तावेज़ी परिकल्पना में एक अतिरिक्त आयाम मिलता है। इससे मेरा अभिप्राय यह है, यहां आपके पास वही समयरेखा है, एक्सोडस, डेविड (1000), 721, 586, एज़्रा, जैसा कि आप वहां नीचे देख रहे हैं। डेविड के समय से पहले, उन्हें नहीं लगता था कि कोई लिखित परंपराएँ थीं, वे सभी मौखिक थीं। जिन विभिन्न लोगों ने इज़राइल का निर्माण किया, उन्हें ऐसा नहीं लगा कि यह एक समरूप इकाई थी, बल्कि यह कि वे विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए थे, प्रत्येक समूह अपने साथ मौखिक परंपराएँ लेकर आया था। फिर वे सभी अंततः दाऊद के समय के आसपास इस्राएल के इस राष्ट्र में ढह गए। फिर उन मौखिक परंपराओं में से, आपके पास उनमें से कुछ को समय के साथ जे दस्तावेज़ में ढालने की एक प्रक्रिया थी। इसी तरह, आपके पास दूसरों को ई दस्तावेज़ में ढालने की एक प्रक्रिया थी। आपके पास डी में चलने वाली परंपरा की एक अलग रेखा थी, और पी में चलने वाला एक अलग ट्रैक था। देखिए, वह इसे समय के साथ बढ़ाता है और इस तरह धीरे-धीरे आपके पास जे दस्तावेज़ बनता है, ई, और उसके बाद आप फिर से प्राप्त करते हैं 621 ईसा पूर्व के आसपास जे, ई को मिलाकर एक रिएक्टर, इस बीच, डी दस्तावेज़ तैयार किया जा रहा था और पी दस्तावेज़ और अंत में तीनों जेई, डी और पी को एक साथ इकट्ठा किया गया। इसलिए एक सरल समयरेखा जैसी चीज़ के बजाय आपको एक अधिक जटिल स्थिति मिलती है जहां इनमें से प्रत्येक दस्तावेज़ का अपना इतिहास होता है, इससे पहले कि वह अन्य दस्तावेज़ों के साथ जुड़ जाए।

लिखित रचना की मौखिकता

इनमें से कुछ कहानियाँ जो मौखिक थीं, उन्हें लिखित रूप में प्रस्तुत किया गया होगा और वे तब एक अलग कहानी इकाई के रूप में लिखित रूप में मौजूद रही होंगी। तो अलग-अलग कहानी इकाइयों का एक समूह था और धीरे-धीरे, यह उनके सिद्धांत का हिस्सा है, आपने इन इकाइयों को किसी प्रकार के क्रम में एक साथ जोड़ दिया है, लेकिन इसे पूरा होने में कुछ समय लगा। ऐसा करने में, विचार यह था कि इनमें से बहुत सी कहानी इकाइयों को कहानी इकाइयों के अनुक्रम में एक साथ पिरोया गया था, उदाहरण के लिए, अब्राहम कथा के लिए कहानी अनुक्रम। आपके पास इस प्रकार के सिद्धांत के अनुसार कहानियाँ होंगी जिनकी पृष्ठभूमि मूल रूप से काफी भिन्न थी, लेकिन धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से संबंधित हो गईं। वे इब्राहीम के उसी नाम के अंतर्गत समाहित हो गए और एक लिखित दस्तावेज़ या स्रोत में व्यवस्थित हो गए। कहानियों का बहुत पुनर्निर्माण हुआ, कहानियों में बहुत सारे संशोधन हुए, उन्हें उस प्रक्रिया में एक साथ फिट किया गया। यह एक लंबी प्रक्रिया थी। लेकिन यहां पी के साथ कहें, तो आपके पास 450 ईसा पूर्व का कोई पी लेखक नहीं है जिसके साथ काम करने के लिए कोई पूर्ववर्ती सामग्री न हो। एमस्टर्डम में मेरे पास जो प्रोफेसर थे, उनकी एक डच अभिव्यक्ति थी जिसका मैं यहां अनुवाद कर रहा हूँ, "बस इसे अपने अंगूठे से चूस रहा हूँ।" आपके पास कोई लेखक नहीं है जो बस बैठकर ऐसा करता रहे। आपके पास एक लेखक है जो पूर्ववर्ती परंपराओं के साथ काम कर रहा है और उनमें से प्रत्येक परंपरा का अपना लंबा इतिहास है।

गट्टुंग से सिट्ज़ इम लेबेन

लेकिन गुंकल के सिद्धांत पर वापस जाने के लिए, उन्होंने महसूस किया कि यदि आप कहानी इकाइयों को अलग कर सकते हैं और उन्हें एक निश्चित साहित्यिक प्रकार, गैट्टुंग या शैली के रूप में लेबल कर सकते हैं, तो आप यह सिद्धांत दे सकते हैं कि जीवन ने किस प्रकार की कहानी प्रकार को जन्म दिया है। इन कहानियों का विश्लेषण करने के लिए उन्होंने इसी पद्धति का उपयोग किया था, और हम देखेंगे कि उन्होंने कुछ ही मिनटों में इसे कैसे पूरा किया। एक बात, गुंकल की सामग्री में वेलहाउज़ेन की तुलना में अधिक प्राचीनता है।

फ़ायदे

दूसरी बात यह है कि जहां तक यह साहित्यिक प्रकार और स्थितियों का मामला है जो एक विशेष साहित्यिक प्रकार को जन्म देते हैं। एक विचार के रूप में इसकी निश्चित वैधता है, कम से कम अमूर्त रूप में। आप आधुनिक साहित्य में सोच सकते हैं, लेखन की सभी प्रकार की विभिन्न शैलियाँ हैं, यदि आप टेलीग्राम की तुलना पाठ्यपुस्तक से करते हैं, तो वहाँ साहित्यिक शैली काफी भिन्न होती है। यदि आप उसकी तुलना एक प्रेम पत्र से करते हैं और उसकी तुलना एक विज्ञापन से करते हैं और आप उसकी तुलना एक कूटनीतिक विज्ञप्ति से करते हैं, तो लेखन के उन सभी रूपों में साहित्यिक शैली काफी भिन्न होती है। एक विशेष स्थिति होती है जो एक प्रेम पत्र, एक विज्ञापन ब्रोशर या कुछ और उत्पन्न करती है। तो आप लेखन के एक टुकड़े को देख सकते हैं और कह सकते हैं, "ओह, यह लेखन की शैली है और इसे इसी तरह के संदर्भ में बनाया गया होगा।" तो एक विचार के रूप में इसकी एक निश्चित वैधता है और साहित्यिक विश्लेषण में, यह निश्चित रूप से एक भूमिका निभा सकता है। गुंकल के साथ और विशेष रूप से उनके कई अनुयायियों के साथ, जिस तरह से उन्होंने इस विचार का उपयोग किया वह कुछ और था क्योंकि वह जीवन में स्थितियों के इतने काल्पनिक और काल्पनिक प्रकार के पुनर्निर्माण में जाते हैं जो साहित्य का निर्माण करते हैं कि यह बहुत ही मनमाना हो जाता है।

उच्च से निम्न आलोचना भेद

उच्च आलोचना के विपरीत, निचली आलोचना का संबंध पाठ से होता है। दूसरे शब्दों में, आपको ग्रीक न्यू टेस्टामेंट या हिब्रू ओल्ड टेस्टामेंट की एक प्रति मिलती है जिसमें यदि आपके पास एक अच्छी प्रति, एक महत्वपूर्ण संस्करण है, तो इसमें फुटनोट होंगे जो पांडुलिपियों की तुलना करेंगे, जहां एक पांडुलिपि से दूसरी पांडुलिपि के बीच थोड़ा अंतर है। . आप उनकी तुलना कुछ निश्चित तरीकों से करते हैं जिनका उपयोग यह स्थापित करने के लिए किया जाता है कि प्रसारण की प्रक्रिया में मूल पाठ क्या था जिसके कारण विभिन्न पांडुलिपियों में कुछ भिन्नताएं पाई गईं। यह निम्नतर आलोचना है; विशिष्ट सीमा की पांडुलिपियों से मूल पाठ को स्थापित करने के लिए वापस काम करना। दूसरी ओर, उच्च आलोचना, विश्लेषण के लेखकत्व और लेखकत्व की तारीख से

संबंधित है। यह उच्चतर आलोचना है। आलोचना की दो धाराएँ: उच्चतर और निम्न। उच्च आलोचना अपने आप में एक अपमानजनक भाव रखती है, क्योंकि इसका अभ्यास और प्रभाव काफी हद तक नकारात्मक रहा है। लेकिन उच्च आलोचना के लिए एक बहुत ही वास्तविक जगह है, बाइबिल साहित्य पर गौर करें और स्थान, समय, लेखक और सेटिंग का पता लगाने का प्रयास करें। वह उच्चतर आलोचना है; इसे सही तरीके से या गलत तरीके से किया जा सकता है।

गंकल के मिथक और किंवदंतियाँ कहानी इकाइयाँ और सिट्ज़ इम लेबेन

प्रविष्टि एचएफ हैन, द ओल्ड टेस्टामेंट इन मॉडर्न रिसर्च द्वारा है। मैं अध्याय 4 से एच.एफ. हैन को उद्धृत करना चाहता हूँ। यह इस छोटी सी पुस्तक में है, एक बहुत ही उपयोगी पुस्तक, द ओल्ड टेस्टामेंट इन मॉडर्न रिसर्च, यह ओल्ड टेस्टामेंट में पिछली शताब्दी के शोध का सारांश प्रस्तुत करती है और अध्याय 4 आलोचना के रूप में है। लेकिन हैन कहते हैं, "गंकल का मानना था कि आदिम लोगों की साहित्यिक प्रतिभा सबसे पहले चीजों की उत्पत्ति के बारे में मिथकों में व्यक्त हुई थी। मिथकों में, देवता प्राथमिक अभिनेता होते हैं जबकि किंवदंतियों में कारनामे मानव लोक नायकों के बारे में होते हैं। किंवदंतियों में, पुरुष प्राथमिक अभिनेता होते हैं। तो गंकल को लगा कि आपके पास मिथक और किंवदंतियाँ हैं। "उन्होंने इब्रानियों के बीच इस तरह की लोकप्रिय परंपरा के शुरुआती उदाहरणों के लिए उत्पत्ति की कहानियों की ओर रुख किया। इसके अलावा, उन्होंने माना कि लोकप्रिय किंवदंती, अपने स्वभाव से, विस्तारित कथन के बजाय व्यक्तिगत कहानी का रूप लेती है और इस प्रकार उन्होंने उत्पत्ति की कथाओं को अलग-अलग साहित्यिक इकाइयों में बदल दिया। उन्होंने तर्क दिया कि ये अपने वर्तमान स्वरूप में लिखे जाने से बहुत पहले से पाठ और गीत में स्वतंत्र रूप से मौजूद थे। यहां तक कि कहानियों को कहानी चक्रों में समूहित करना, जैसे कि जेनेसिस में शामिल है, गंकल के विचार में था, जो पहली बार साहित्यिक-पूर्व चरण में किया गया था। इसलिए मैंने पहले से ही कहानी इकाइयों को तोड़ने के बारे में कुछ संकेत दिया है, फिर पहचानें कि वे किस प्रकार की हैं और जीवन में किस स्थिति (सिट्ज़ इम लेबेन) ने उन्हें उत्पन्न किया होगा।

किंवदंती और इतिहास का संबंध

अब, गुंकेल के लिए, उत्पत्ति की कथाएँ किंवदंती थीं, इतिहास नहीं। उन्होंने द लेजेंड्स ऑफ जेनेसिस नाम से एक किताब लिखी। अब, जब आप किसी को यह कहते हुए सुनते हैं, उत्पत्ति किंवदंती है, यह इतिहास नहीं है, तो यह संभवतः एक नकारात्मक प्रतिक्रिया को उकसाता है। ठीक ही तो। गंकेल इसके वास्तविक इतिहास होने के विरुद्ध तर्क देने का प्रयास करता है। द लेजेंड्स ऑफ जेनेसिस के पृष्ठ 2 पर वह यही कहते हैं, “किंवदंती और झूठ के संवेदनहीन भ्रम ने अच्छे लोगों को यह स्वीकार करने में संकोच किया है कि पुराने नियम में किंवदंतियाँ हैं। लेकिन किंवदंतियाँ झूठ नहीं हैं। इसके विपरीत, वे कविता का एक विशेष रूप हैं। पुराने नियम के धर्म की उदात्त भावना, जिसने कविता की इतनी सारी किस्मों को नियोजित किया, को इस रूप में भी शामिल क्यों नहीं होना चाहिए? हर जगह के धर्म में, जिसमें इज़राइली धर्म भी शामिल है, विशेष रूप से कविता और काव्यात्मक आख्यानो को महत्व दिया गया है क्योंकि काव्यात्मक आख्यान धार्मिक विचार का माध्यम बनने के लिए गद्य की तुलना में कहीं बेहतर योग्य हैं। उत्पत्ति राजाओं की पुस्तक की तुलना में अधिक गहन धार्मिक पुस्तक है। अब वह जो कह रहा है वह यह है कि उत्पत्ति की कथाएँ किंवदंतियाँ हैं जिन्हें वह कविता के रूप में लेबल करता है और कहता है कि यह गद्य या इतिहास की तुलना में धार्मिक विचारों को प्रसारित करने का एक बेहतर माध्यम है। वह कहते हैं कि इसी कारण से, उत्पत्ति राजाओं की पुस्तक की तुलना में अधिक धार्मिक पुस्तक है जिसे वह इतिहास के रूप में वर्गीकृत करेंगे।

ईसा मसीह और प्रेरितों का उत्पत्ति कथाओं के इतिहास से कोई संबंध नहीं है

पेज 3 पर थोड़ी देर बाद, वह कहते हैं, "आपत्ति उठाई गई है कि यीशु और प्रेरितों ने स्पष्ट रूप से इन ख़ातों को तथ्य माना है, कविता नहीं।" तुम्हें पता है उसकी प्रतिक्रिया क्या है? “मान लीजिए उन्होंने ऐसा किया। नए नियम के लोगों को ऐसे मामलों में असाधारण व्यक्ति नहीं माना जाता है, लेकिन उन्होंने अपने समय के दृष्टिकोण को साझा किया है। इसलिए, हमें पुराने नियम के साहित्यिक इतिहास के बारे में प्रश्नों के समाधान के लिए नए नियम की ओर देखने की आवश्यकता नहीं है। तो मसीह और प्रेरितों की गवाही का उत्पत्ति की कथा के चरित्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

है। उनका कहना है कि यह अप्रासंगिक है। वे अपने समय के बच्चे मात्र हैं। उन्होंने उस समय सोचा कि यह इतिहास है और उन्होंने उस दृष्टिकोण को स्वीकार कर लिया; वह इसे इतनी जल्दी खारिज कर देता है। फिर वह किंवदंती को इतिहास से अलग करने के लिए कई मानदंड गिनाता है। मैं इस पर थोड़ी देर बाद वापस आऊंगा।

चमत्कारी तत्वों को हटाने की एक प्राथमिकता

मैं उन सभी मानदंडों पर नहीं जाऊंगा, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण एक पृष्ठ 7 पर है। वह कहते हैं, "किंवदंती का सबसे स्पष्ट मानदंड यह है कि यह अक्सर उन चीजों की रिपोर्ट करता है जो काफी अविश्वसनीय हैं।" जैसे ही वह इसे विकसित करता है, उत्पत्ति के संबंध में, वह कहता है, "आधुनिक इतिहासकार किसी भी चीज़ को असंभव घोषित करने में कितना भी सतर्क क्यों न हो, वह पूरे विश्वास के साथ घोषणा कर सकता है कि जानवर, साँप और वह गधे, उदाहरण के लिए, बोलते नहीं हैं और उन्होंने कभी भी बात नहीं की है।" . ऐसा कोई वृक्ष नहीं है जिसका फल अमरता या ज्ञान प्रदान करता हो। स्वर्गदूतों और मनुष्यों के बीच शारीरिक संबंध नहीं है, और जैसा कि उत्पत्ति 14 घोषित करती है, 318 पुरुषों के साथ एक विश्व-विजेता सेना को हराया नहीं जा सकता है। अब, वह वहां कई दृष्टान्तों का उपयोग करता है, जिनमें से दोनों स्ट्रॉ मैन हैं, चमत्कारी को खारिज करते हैं और उत्पत्ति की सामग्री को इतिहास से किंवदंतियों के रूप में अलग करने के मानदंड के रूप में अविश्वसनीयता स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

निश्चित रूप से, ऐतिहासिक सामग्री के मूल्यांकन में विश्वसनीयता को खारिज नहीं किया जा सकता है। हम ऐसा हर समय करते हैं: यदि हम एक अखबार का लेखा-जोखा पढ़ते हैं; हम विश्वसनीयता के मानदंड लागू करते हैं। हम विश्वसनीयता देखना चाहते हैं; हम इसे खारिज नहीं करना चाहते। क्या यह महत्वपूर्ण है। लेकिन जब आप बाइबिल की कथा पर आते हैं, तो आप निश्चित रूप से चमत्कार की असंभवता को पहले से मानकर यह निर्धारित नहीं कर सकते हैं कि यह किंवदंती है या इतिहास है और यही गंकेल की कार्यप्रणाली के केंद्र में है। देखिए, यह एक प्रारंभिक बात है , यह कुछ ऐसा है जिसे वह मानता है। चमत्कार नहीं होते. ऐसा क्यों नहीं होता? खैर, हमने इसका अनुभव नहीं किया है, इसलिए ऐसा नहीं होता है। यदि चमत्कार नहीं होते, तो

कोई भी कहानी जिसमें चमत्कार शामिल हो, इतिहास नहीं है। देखिए, यह उसके तर्क का तरीका है और उसका शुरुआती बिंदु वह है जहां वह गलत है। प्रारंभिक बिंदु सादृश्य के सिद्धांत पर आधारित है, ऐतिहासिक सादृश्य का सिद्धांत, अर्थात्, जो कुछ भी आपने अपने इतिहास में अनुभव नहीं किया है वह कुछ ऐसा है जो घटित नहीं होता है। हम इस पर बाद में वापस आएंगे। बाइबिल की सामग्रियों के साथ व्यवहार करते समय यह निश्चित रूप से अनुचित है जो स्वयं को मुक्ति दिलाने के लिए मानव इतिहास में भगवान के हस्तक्षेप के रिकॉर्ड के रूप में प्रस्तुत करता है। यदि ऐसा है, तो आप उस सामग्री के साथ न्याय नहीं कर सकते यदि आप शुरू से ही दैवीय हस्तक्षेप की संभावना को खारिज कर देते हैं। देखिए, दोनों पूरी तरह से संघर्ष में हैं।

उसे महसूस होगा कि इतिहास के कुछ ऐसे तत्व थे जो शायद वहां थे, लेकिन परत-दर-परत और बहुत से ऐसे तत्वों के साथ मिश्रित थे जो नहीं थे। उनका कहना इतना नहीं था। वह फिर इस सवाल पर आ जाता है कि इतिहास कितना महत्वपूर्ण है? यह कितना महत्वपूर्ण है कि ये चीज़ें वास्तव में घटित हुईं? उसके लिए यह इतना महत्वपूर्ण नहीं था। जिस चीज़ में उनकी रुचि थी वह धार्मिक संदेश या सबक था जो हम इन कहानियों से सीख सकते थे। यह कुछ-कुछ ईसप की दंतकथाओं की तरह है; कोई नहीं कहेगा कि ऐसा हुआ था लेकिन आप इसे नैतिक बना सकते हैं।

कविता के रूप में किंवदंती

मुझे थोड़ा और आगे जाने दो। वह किंवदंती के कविता होने के बारे में आगे बात करते हैं। वह कहते हैं, “महत्वपूर्ण बात यह है कि आख्यानों का काव्यात्मक स्वर है और रहेगा। इतिहास, जो हमें यह बताने का दावा करता है कि वास्तव में क्या हुआ है, अपनी प्रकृति में गद्य है, जबकि किंवदंती प्रकृति में कविता है। इसका उद्देश्य प्रसन्न करना, उत्थान करना, प्रेरित करना और आगे बढ़ाना है। जो लोग इस तरह की कहानियों के साथ न्याय करना चाहते हैं, उनके पास कहानी को बताने में कुछ सौंदर्यबोध की क्षमता होनी चाहिए कि यह क्या है और इसका क्या तात्पर्य है और ऐसा करने में कोई शत्रुतापूर्ण या यहां तक कि संदेहपूर्ण निर्णय व्यक्त नहीं करना है, बल्कि बस प्यार से अध्ययन करना है। उसकी सामग्री की प्रकृति। जिसके पास हृदय और भावना है उसे समझना चाहिए, उदाहरण के लिए इसहाक के बलिदान के मामले में, कि महत्वपूर्ण बात कुछ

ऐतिहासिक तथ्यों को स्थापित करना नहीं है। गुंकल की राय में, कहानी का उद्देश्य यह बताना नहीं है कि क्या हुआ, बल्कि श्रोता को उस पिता के हृदय विदारक दुःख से अवगत कराना है, जिसे अपने बच्चे को अपने हाथों से बलि देने का आदेश दिया गया था और फिर उसकी असीम कृतज्ञता और खुशी जब भगवान की दया उसे इस गंभीर परीक्षण से मुक्त कर देती है। और जो कोई भी इन पुरानी किंवदंतियों में विशिष्ट काव्यात्मक आकर्षण को समझता है, उसे बर्बर लोगों से चिढ़ महसूस होनी चाहिए - क्योंकि ऐसे पवित्र बर्बर लोग भी हैं - जो सोचते हैं कि वह इन आख्यानों को तभी सही मूल्य दे रहे हैं जब वह उन्हें इतिहास में गद्य के रूप में मानते हैं। क्या आपने उसे पकड़ लिया? यदि आप उत्पत्ति को गद्य इतिहास के रूप में मानते हैं, जो आपको बताता है कि वास्तव में क्या हुआ था, यहां गुंकल के अनुसार, आप एक बर्बर हैं। दूसरे शब्दों में, आपके पास इन चीजों की कविता को देखने के लिए आवश्यक सौंदर्य गुण नहीं है।

एटिऑलॉजिकल किंवदंतियों के रूप में उत्पत्ति

इस पुस्तक का दूसरा अध्याय उत्पत्ति में विभिन्न प्रकार की किंवदंतियों पर है। मैं इस पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करने जा रहा हूँ, बस कुछ और उदाहरण देने जा रहा हूँ। मेरे पास यहां पहले से ही यह शब्दावली है, शायद आप सोच रहे होंगे कि यह सब क्या है। गुंकल उत्पत्ति की अधिकांश किंवदंतियों को एटिऑलॉजिकल किंवदंतियाँ मानते हैं। अब उसका मतलब क्या है? एटियलजि कारण का अध्ययन है। यह शब्द अक्सर बीमारी के संबंध में प्रयोग किया जाता है। किसी बीमारी का कारण क्या है? यह इस बात का अध्ययन है कि कोई विशेष रोग किस कारण से उत्पन्न होता है। जैसा कि उत्पत्ति की किंवदंतियों पर लागू होता है, इसका मतलब है कि किंवदंतियाँ बताती हैं कि कोई चीज़ वैसी क्यों है जैसी वर्तमान में देखी जाती है। अब, हम इसका उदाहरण देंगे और मुझे लगता है कि यह स्पष्ट हो जाएगा।

गुंकल के अनुसार, विभिन्न प्रकार की एटियलॉजिकल किंवदंतियाँ हैं। याद रखें मैंने कहा था कि वह कहानी इकाइयों को अलग करना चाहते थे और फिर उन्हें साहित्यिक प्रकारों के अनुसार लेबल करना चाहते थे। ये एटिऑलॉजिकल किंवदंतियों के कुछ प्रकार हैं। पहला नृवंशविज्ञान है। वह कहते हैं, "जनजातियों के संबंधों के कारणों को जानने की इच्छा है। कनान अपने भाइयों का

सेवक क्यों है? जाफेट का क्षेत्र इतना विस्तृत क्यों है? लूत के बच्चे दुर्गम पूर्व में क्यों रहते हैं?" आप आसानी से देख सकते हैं कि ये चीज़ें मौजूद हैं। लूत की सन्तान यहाँ निवास करती थी, येपेत का विस्तृत क्षेत्र था, इत्यादि। ऐसा क्यों है? ऐसा कैसे है कि रूबेन ने अपना जन्मसिद्ध अधिकार खो दिया है? कैन को बेचैन भगोड़े के रूप में क्यों भटकना चाहिए? बेशेबा हमारा क्यों है, गेरार के लोगों का क्यों नहीं? इश्माएल केवल इस क्षेत्र के साथ बेडौइन लोग क्यों बन गए? खैर, उनका कहना है कि कहानियाँ चीज़ों को समझाने, इन सवालों के जवाब देने के लिए विकसित की गईं और ऐसी कहानियाँ नृवंशविज्ञान संबंधी किंवदंतियाँ हैं। वे उत्तर देते हैं कि कोई जातीय समूह वैसा क्यों है जैसा वह दिखता है। लेकिन ये काल्पनिक हैं। वह कहते हैं, "ऐसी जातीय किंवदंतियाँ जो जनजातीय संबंधों को समझाने के लिए एक काल्पनिक कहानी बताती हैं, निश्चित रूप से उन ऐतिहासिक किंवदंतियों से अलग करना मुश्किल है जिनमें किसी वास्तविक घटना की परंपरा के अवशेष शामिल हैं।" लेकिन अधिकांश भाग के लिए, उनकी नृवंशविज्ञान संबंधी कहानियाँ लोगों के संबंधों को समझाने वाली काल्पनिक कहानियाँ थीं और वे जहाँ रहते थे वहाँ क्यों रहते थे और वे जो थे वही क्यों थे। वह कहते हैं, "ये व्याख्याएँ अब हमें जितनी बचकानी लगती हैं, और पुराने ज़माने के लोगों के लिए ऐसी चीज़ों के सही कारणों का पता लगाना उतना ही असंभव था, फिर भी हमें इन काव्य कथाओं की गहराई को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।"

व्युत्पत्ति संबंधी किंवदंतियों के उदाहरण

व्युत्पत्ति संबंधी किंवदंतियाँ। उनका संबंध नामों, नस्लों, पहाड़ों, कुओं, अभयारण्यों और शहरों की उत्पत्ति और अर्थ से था। वह इसे कुछ लोकप्रिय व्युत्पत्तियों के साथ दर्शाते हैं। याद रखें कि उन्होंने इसे जर्मन में लिखा था। इसका अनुवाद किया गया है और उन्होंने कुछ जर्मन चित्रणों का उपयोग किया है लेकिन फिर उन्होंने कुछ अंग्रेजी चित्रों का भी उपयोग किया है। वह कहते हैं, "हमारी भी अपनी लोकप्रिय व्युत्पत्तियाँ हैं। कितने लोग मानते हैं कि न्यू हैम्पशायर और वर्मोंट के बीच और मैसाचुसेट्स और कनेक्टिकट के पार बहने वाली नोबल नदी का नाम इसलिए रखा गया है क्योंकि यह पहले दो राज्यों को 'जोड़ती' है और बाद के दो राज्यों को 'काटती' है। क्या इसीलिए कनेक्टिकट नदी को वैसा कहा जाता है जैसा वह है? यह नामों का अर्थ समझाने वाली एक

काल्पनिक कहानी है। और उन्हें लगता है कि पेंटाटेच में पाए गए नामों के अर्थ समझाने वाली कुछ कहानियाँ, सादृश्य से, उसी तरह की काल्पनिक लोक व्याख्या हैं। यहां एक और है : " ऐसा कहा जाता है कि मैनहट्टन द्वीप का नाम एक जंगली व्यक्ति के उस उद्गार से रखा गया था, जो शुरुआती बर्गर द्वारा पहनी जाने वाली डच टोपी के आकार से प्रभावित था, 'मैन हैट ऑन!' उत्पत्ति में इसी तरह की किंवदंतियाँ असंख्य हैं। बाबेल शहर का नाम इस तथ्य के कारण रखा गया है कि वहां भगवान ने मानव भाषाओं को भ्रमित किया था, बाबेल, उत्पत्ति 11:9। जैकब की व्याख्या ' एड़ी धारक ' के रूप में की जाती है क्योंकि जन्म के समय उसने अपने भाई को एड़ी से पकड़ रखा था, जिससे उसने उसका जन्मसिद्ध अधिकार छीन लिया था। और कितना आगे और कितने पर। तो वह जो कह रहा है वह यह है कि नामों का अर्थ समझाने वाली बहुत सी कहानियाँ "मैनहट्टन" जितनी ही काल्पनिक हैं। लेकिन फिर, आप देखें कि इसका ऐतिहासिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह उसे पूरी तरह से नष्ट कर देता है। लेकिन देखिए, फिर वह वापस आता है और कहता है कि यदि आप इसे इतिहास के रूप में पढ़ते हैं, तो आप एक बर्बर हैं; आपके पास इसे समझने के लिए सौंदर्यात्मक काव्यात्मक अंतर्दृष्टि नहीं है।

औपचारिक किंवदंतियाँ

औपचारिक किंवदंतियाँ। उनका कहना है कि इनमें से बहुत सारे ऐसे हैं, जो धार्मिक समारोहों के नियमों की व्याख्या करते हैं। "जब बच्चे अपने पिता को फसह के पर्व के दौरान सभी प्रकार के विचित्र रीति-रिवाजों का पालन करते हुए देखते हैं, तो वे निर्गमन 12:26 से पूछेंगे, 'इसका क्या मतलब है' और फिर उन्हें फसह की कहानी बताई जाएगी। यहोशू 4:6, जॉर्डन में बारह पत्थरों के संबंध में एक समान निर्देश दिया गया है, जिसे पिता को जॉर्डन नदी के माध्यम से पारित होने के स्मारक के रूप में बच्चों को समझाना है। इन उदाहरणों में, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि ऐसी किंवदंती किसी प्रश्न का उत्तर कैसे है। हम फसह के पर्व पर ऐसा क्यों करते हैं? खैर, फिर फसह की कहानी बताई गई है और एक समकालीन अनुष्ठान की व्याख्या की जा सकती है। वह खतना, सब्त, इत्यादि के संबंध में भी यही कहता है। वह कहते हैं, "कोई भी इस्राएली इन सब चीजों का वास्तविक कारण नहीं बता सकता था, क्योंकि वे बहुत पुराने थे। लेकिन इस शर्मिंदगी से छुटकारा

पाने के लिए, मिथक और किंवदंतियाँ सामने आती हैं। वे एक कहानी सुनाते हैं और पवित्र रिवाज की व्याख्या करते हैं: बहुत पहले एक घटना घटी थी जिससे यह समारोह बहुत स्वाभाविक रूप से शुरू हुआ था। फिर हमें फसह की उत्पत्ति की कहानी या जो भी हो, मिलती है। इन्हें वे औपचारिक किंवदंतियाँ कहते हैं।

भूवैज्ञानिक किंवदंतियाँ

भूवैज्ञानिक किंवदंतियाँ। हम उस पर रुकेंगे. यह स्थानीयता की उत्पत्ति की व्याख्या करता है। “मृत सागर अपने भयानक रेगिस्तान के साथ कहाँ से आता है? इस क्षेत्र को इसके निवासियों के भयानक पाप के कारण भगवान द्वारा शापित किया गया था। नमक का खम्भा, जो स्त्री जैसा दिखता है, कहाँ से आता है? वह एक महिला है, लूत की पत्नी, जिसे ईश्वर के रहस्य की जासूसी करने की कोशिश की सजा में नमक के खम्भे में बदल दिया गया। ये भूवैज्ञानिक किंवदंतियाँ हैं।

शानदार कहानियाँ लेकिन वास्तविक इतिहास को खारिज करना

अब, जैसा कि आप इन सब से देख सकते हैं, गुंकल के अनुसार, वास्तव में क्या हुआ, यह बाइबिल की कहानियों में महत्वपूर्ण बात नहीं है। उसकी रुचि उस संदेश में है जो कहानी द्वारा व्यक्त किया गया है। वह उस खंड में कहते हैं जो आपकी ग्रंथ सूची में सूचीबद्ध है, जो एकमात्र अन्य खंड है जिसका अंग्रेजी में गुंकल द्वारा अनुवाद किया गया है, एक दिलचस्प शीर्षक है: व्हाट रिमेन्स ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट? इस संदेश के साथ यह एक अच्छा प्रश्न है। लेकिन वह उस खंड, पृष्ठ 20 में कहते हैं, "उस ताकत के बारे में सोचें, जिसके साथ कैन की कहानी में, हत्या को बुनियादी अपराध के रूप में सामने रखा गया है, जैकब की कहानी का आकर्षण, भाईचारे की ईर्ष्या और भाईचारे के प्यार से भरपूर, विश्वास से भरा हुआ है और एक सर्वोच्च प्रावधान, कब्र में मृत्यु से परे एक विधवा के प्रेम को प्रदर्शित करने वाली रूथ आइडियल का आकर्षण, सृजन कथा की शानदार गंभीरता, स्वर्ग की अद्भुत कहानी, भोली, फिर भी गहन। वह कहते हैं, "सृष्टि की कहानी, जो उसके धार्मिक विचारों की तरह आज भी मूल्यवान है, हमारे लिए वास्तविक इतिहास नहीं है।"

इन कहानियों से उन्हें जो मिला वह शानदार धार्मिक अवधारणाएँ थीं जो उन्हें लगा कि ये कहानियाँ इन कहानियों में अंतर्निहित हैं: ईश्वर की शक्ति, दैवीय शासन और विधान, अच्छे और बुरे का दैवीय प्रतिशोध, धार्मिक भावना, इस तरह की चीज़ें। यही पुराने नियम का मूल्य है। उन धार्मिक अवधारणाओं और भावनाओं को कहानियों में व्यक्त किया गया है, न कि वास्तव में जो हुआ था। उसे वास्तव में इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है कि क्या हुआ। उनकी कार्यप्रणाली आपको यह निर्धारित करने से रोकती है कि वास्तविक इतिहास में क्या हुआ था।

मैं अगले घंटे में शुरू होने वाले गुंकल के बारे में थोड़ा और कहना चाहता हूँ। फिर हम अगले साथी, वॉन राड के पास जायेंगे।

सारा एम्मन्स द्वारा प्रतिलेखित

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित

राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया